जीएम मक्का व ट्यूमर सम्बंधी शोधपत्र वापिस

2012 में एक शोध पत्र प्रकाशित हुआ था। फ्रांस के कान विश्वविद्यालय के आणविक जीव वैज्ञानिक गिलेस-एरिक सिरेलिनी के समूह द्वारा लिखित इस शोध पत्र में दावा किया गया था कि जीएम मक्का के उपभोग से चूहों में गंभीर बीमारियां हो जाती हैं। यह शोध पत्र *फूड एंड केमिकल टॉक्सिकॉलॉजी* नामक शोध पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। अब इस शोध पत्रिका के प्रकाशक एलसेवियर ने घोषणा की है कि वे इस शोध पत्र को वापिस ले रहे हैं।

पिछले माह शोध पत्रिका के प्रधान संपादक वालेस हेज़ ने सिरेलिनी से आग्रह किया था कि वे अपना शोध पत्र वापिस ले लें अन्यथा शोध पत्रिका को यह कदम उठाना पड़ेगा। इस पर सिरेलिनी का कहना था कि उन्होंने पूरी ईमानदारी से यह अध्ययन किया है और वे अपने निष्कर्षों पर अडिग हैं। सिरेलिनी का कहना था कि शोध पत्रिका द्वारा इस शोध पत्र को वापिस करने का निर्णय पत्रिका में नए संपादक रिचर्ड गुडमैन की नियुक्ति की वजह से हुआ है। रिचर्ड गुडमैन पहले जैव-टेक्नॉलॉजी कंपनी मॉन्सेंटो में काम करते थे।

शोध पत्र के अन्य लेखक जील स्पायरो डी वेंडोमॉई का कहना है कि इस शोध पत्र की समीक्षा किसी भी अन्य शोध पत्र से ज़्यादा की गई थी। उनके मुताबिक शोध पत्र को वापिस लिया जाना जन स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ है।

वैसे एलसेवियर ने अपने वक्तव्य में कहा है कि इस शोध पत्र में किसी तरह की धोखाधड़ी अथवा आंकड़ों को गलत ढंग से प्रस्तुत करने का कोई प्रमाण नहीं है। इस शोध पत्र को वापिस तो इसलिए किया जा रहा है क्योंकि इसमें जिस तरह के जंतुओं का उपयोग किया गया और जितनी कम संख्या में उपयोग किया गया उसके चलते कोई सुनिश्चित निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है।

उपरोक्त अध्ययन में पाया गया था कि मॉन्सेंटो द्वारा विकसित ग्लायफोसेट-प्रतिरोधी मक्का (NK603)चूहों को 2 साल तक खिलाए जाने के बाद उनमें कहीं ज़्यादा ट्यूमर पैदा हुए और ये चूहे सामान्य चूहों की अपेक्षा जल्दी मर गए। अध्ययन में यह भी देखा गया था कि चूहों में ट्यूमर तब भी विकसित हुए जब उनके पेयजल में ग्लायफोसेट शाकनाशी मिलाया गया। यह शाकनाशी जीएम मक्का की फसल में खूब उपयोग किया जाता है।

हालांकि गुडमैन ने इस मामले में अपना हाथ होने से इन्कार किया है मगर कई वैज्ञानिकों को लगता है कि मुख्य मुद्दा यही है। इस तरह के हितों के टकराव आए दिन देखने को मिलते हैं। उपरोक्त शोध पत्र ने जीएम फसलों और ग्लायफोसेट की दीर्घावधि विषाक्तता को लेकर जो सवाल उठाए हैं वे महत्वपूर्ण हैं और मात्र शोध पत्र को वापिस ले लेने से ये सवाल खत्म नहीं हो जाएंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***